हर धर्म का एक धर्म

कोई भी धर्म कर्मकांड से अपने परमात्मा को नहीं प्राप्त कर सकता है। कर्मकांड हर धर्म का अलग–अलग हो सकता है, पर परमात्मा को प्राप्त करने का हर धर्म का एक ही आंतरिक तरीका हो सकता है और वह है शरीर से प्यार, नजरों में चाहत, सांसों में उसकी सुगंध, आत्मा में परमात्मा के प्रकाश का लेप (परमात्मा के रंग में पूर्ण रूप से रंगा हो) के साथ मन से सबसे अधिक उसी को देखते रहने से ही हर धर्म के लोग अपने परमात्मा तक पहुंच सकते हैं।

अशोक मानव

प्रकृति का विकास वैज्ञानिक रूप से क्रमशः उन्नतिपूर्ण होता जा रहा है। इस विकास के काफी समय बाद मानव विकसित स्वरूप में प्रकृति के प्रकाश में आया। शरीर की सुंदरता मानव को मिल गई पर मन, भाव, आचरण, आंतरिक हृदय परिवर्तन को पूर्ण सुंदर बनाना प्रकृति की विकासोन्मुखी प्रक्रिया में निरंतर जारी है। मानव जीवन प्रकृति का सबसे विकसित प्राणी है। जब से मानव अपने आपको जाना तभी से प्रकृति निर्माण और अपने उत्पत्ति का कारण जानने की जिज्ञासा पैदा हुई। अपनी इसी जिज्ञासा शांति के लिए धर्म की खोज शुरु हुई। मानव जीवन प्रकृति के चारों तरफ था। एक नस्ल क्षेत्र विशेष के लोग धर्म की व्याख्या अपने तरीके से की। जिसके कारण अनेक धर्म पैदा हो गए। यहां पर सोचने का विषय हैं। प्रकृति में मानव जीवन में अनेकों क्षेत्र में विशिष्ट प्रतिभा के लोग पैदा होते रहे हैं। जैसे– मानव जीवन में कवि, दार्शनिक, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ व अन्य प्रतिभा के लोग आए। ठीक इसी प्रकार संत, महात्मा, पीर पैगम्बर, व अन्य धर्म के अनुसार अलग–अलग नामों के रूप में आए। ये लोग धर्म की महत्ता को पहचाने और खुद इस राह पर चलकर लोगों को इस राह पर चलने के लिए प्रेरित किए। अलग–अलग समय में कोई न कोई विशिष्ट महापुरुष पैदा होते रहे। ये अपनी प्रबल इच्छाशक्ति और ध्यान से अपने आप को विशिष्ट बना लिए। ये साधनारत जीवन जीते–जीते पूर्ण मानव बन गए। इनकी इच्छाशक्ति इतनी प्रबल हो गई कि वे जैसा चाहते थे वैसा ही होने लगा। इनकी इस असीमित क्षमता को देखकर लोग इन्हें ईश्वर के रूप में पूजने लगे। यहां पर इनकी क्षमता की वैज्ञानिकता को जानने के बाद ही आगे बढ़ना उचित होगा। एक पारिवारिक समूह एक दूसरे में अपनी खुशियां बांट रहा हो और सभी लोग खुशियां मना रहे हो। ठीक उसी समय एक व्यक्ति के पास फोन आ जाए और किसी दुर्घटना की सूचना मिल जाने पर हर व्यक्ति की खुशी उड़ जाती है। किसी ने कुछ देखा नहीं फिर भी शब्द मात्र से हर व्यक्ति परेशान हो गया। ठीक इसी प्रकार साधनारत व्यक्ति निरंतर अपने ईष्ट को देखता रहता है, तो ईष्ट का प्रकाश उसके अंदर आने लगता है। और उसका शरीर गुणात्मक पदार्थ को बनाने लगता है। जब उसका शरीर पूर्ण गुणात्मक हो जाता है तब वह अपने ईष्ट का प्रकाश निरंतर लेने लगता है। दृढ़ इच्छाशक्ति और ईष्ट का ध्यान करके जैसा करना चाहता है वैसे ही इच्छा धारण करने के बाद उस विषय को पूरा करने वाला आकृति स्वरूप का प्रकाश वहां बन जाता है जो प्रकृति में स्थापित होकर

धर्म का अर्थ होता है ध– धारण करना, रम– रम जाना। अर्थात् जीवन में उन विषयों का चुनाव करना जिसे धारण करने में आनंद की अनुभूति हो। आपकी इसी जिज्ञासा के लिए मानव का ज्ञान धर्म की तरफ गया।